गाने गुनगुनाने लगे। हमारे गांव में एक रामप्रसाद थे। उन अकेले के पास मर्फी का ट्रांजिस्टर था। वे उसे नन्हें बच्चे की तरह सीने से लगाए निकलते। हालांकि उन्होंने तब तक शादी न की थी। उनके जीवन में सब कुछ रेडियो था। वे जहां से निकलते हवा में फिल्मी गाने गूंजते रहते। वे फिल्मों के चलते-फिरते इनसाइक्लोपीडिया बन गए। वे मुझे प्यार करते और लीला नाम से आवाज देते। मैं उनके घर में क भी भी बेधड़क जा सकता था। रेडियो सीलोन और विविध भारती. उनके पसंदीदा चैनल थे। फिल्मी गायकों, संगीतकारों और कलाकारों का परिचय, रामप्रसाद एक्टर ने ही करवाया। मैं उन्हें चाचा कहकर संबोधित करता था। उन दिनों सभी की चाहत में एक बात होती- काश हम रेडियो खरीद सकते। हमने अमीन सयानी की आवाज का जादू बिनाका गीतमाला में सुना।

एक्टर चाचा ने बताया कि विविध भारती का शुरुआती नाम आल इंडिया वैराइटी प्रोग्राम था। जिस का तर्जुमा हुआ अखिल भारतीय विविधरंगी कार्यक्रम। बाद में पंडित नरेन्द्र शर्मा, लेखक-गीतकार ने इसे विविध भारती नाम दिया। जो देश की धड़कन बन गया। इसके साथ पंक्ति (टैगलाइन) पंचरंगी अर्थात पांच कलाओं का समावेश, ये नाम श्रोताओं के ख्वाबों का हिस्सा हो गया। लोगों ने रेडियो सीलोन और विविध भारती से ही फिल्मों को जाना, फिल्मों के प्रचार-प्रसार में रेडियो की भूमिका, असंदिग्ध और अविश्वसनीय है। अगर रेडियो न होता तो इतनी फिल्में न बन पातीं, न ही सिनेमाघरों में चल पाती। लोग पहले फिल्मी गानों के दीवाने हुए और उन गानों से बंध खिंचे सिनेमाघरों तक पहुंचे।

मुझे याद है कि सुबह दस बजे शार्टवेव 19 और 25 मीटर बैंड पर उद्घोषणा होती थी- ये विविध भारती है- आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम-और समय जैसे थम जाता था। शार्टवेव पर बंबई के अलावा यह कार्यक्रम मद्रास (चेन्नई) से भी शुरु हुआ। विविध भारती चेन्नई से पहली उद्घोषणा तेलुगू भाषी उद्घोषिका राजलक्ष्मी ने की। वास्तव में उस दिन हिंदी का उद्घोषक ड्यूटी पर पहुंच न सका। इस तरह दक्षिण भारत में हिंदी का प्रवेश फिल्मी गानों के माध्यम से हुआ। राजलक्ष्मी चेन्नई आकाशवाणी

> “ बंबई में होने की वजह से फिल्मी कलाकारों की आवाज़ों को सीधे रेडियो पर सुनकर हम सब रोमांचित हो उठते थे। एक्टर चाचा की स्मृति अद्भुत थी। उन्होंने बताया कि विविध भारती पर पहला गीत मन्ना डे की आवाज़ में–नाच रे मयूरा प्रसारित हुआ था। इसके गीतकार पंडित नरेन्द्र शर्मा थे और संगीतकार अनिल बिस्वास। इसे प्रसार गीत कहा गया। वाह क्या खूब स्मृति थी एक्टर चाचा की।

में सात बरस तक विविध भारती की उद्घोषिका रहीं। उन्होंने कहा था- फिल्मी गानों ने हमें विशाल भारत से न केवल जोड़ा अपितु एकता के सूत्र में बांधा। एक्टर चाचा ने यह बताया था कि बंबई केंद्र से विविध भारती पर पहली उद्घोषणा शील शर्मा ने की। उनकी आवाज़ में लयात्मक रवानी थी। बंबई में होने की वजह से फिल्मी कलाकारों की आवाज़ों को सीधे रेडियो पर सुनकर हम सब रोमांचित हो उठते थे। एक्टर चाचा की स्मृति अद्भुत थी। उन्होंने बताया कि विविध भारती पर पहला गीत मन्ना डे की आवाज़ में-नाच रे मयूरा प्रसारित हुआ था। इसके गीतकार पंडित नरेन्द्र शर्मा थे और संगीतकार अनिल बिस्वास। इसे प्रसार गीत कहा गया। वाह क्या खूब स्मृति थी एक्टर चाचा की। एक और बात- चाचा नृत्यगीतों के मुरीद थे और कुक्कू उनकी पसंदीदा डांसर थीं। मानो वे उस पर निसार थे। लगता था फिल्मी गानों और कुक्कू में डूबने की वजह से उन्होंने शादी नहीं की।

रेडियो पर कार्यक्रमों के प्रसारणों को पहचानने का आसान शिल्प था, उसकी सिग्नेचर ट्यून अर्थात परिचय धुनों को याद रखना। परिचय धुनों से हम बिनाका गीतमाला, छायागीत, गीतों भरी कहानी, जयमाला, भूले-बिसरे गीत, चित्रध्वनि, चित्रमाला, साज़ और आवाज़ आदि को कार्यक्रम के शुरु होने से ही पहचान लेते और चाचा के पांव के पास बैठ जाते। इतनी रच-बस गई थी परिचय धुनें। रेडियो एक बच्चे की तरह उनकी गोद में होता और वे सिर हिलाते। मेज़ पर उंगलियों से ताल देते और गुनगुनाते। कुंदनलाल सहगल को वे खूब गाते। वही उनके आदर्श थे। इसके अलावा नूरजहां, मल्लिका पुखराज, मन्ना डे, शमशाद बेगम, मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर वे इस हद तक सुनते कि गाने के आरंभिक संगीत को सुनकर फिल्म और गायक का नाम बता देते।

विविध भारती पर उनका प्रिय प्रोग्राम था फौजी भाइयों के लिए विशेष जयमाला कार्यक्रम। यह कार्यक्रम उन्हें इस कदर प्यारा था कि उन्होंने अपनी ड्रेस ही फौजी स्टाइल में सिला रखी थी और अमूमन उसे ही पहनते थे। इस तरह उनकी शिनाख्त एक ड्रेस के हीरो के रूप में बनी। यह असर था जयमाला कार्यक्रम का। हम उनसे पूछते और वे दुर्लभ जानकारी देते- जैसे कि पहला विशेष जयमाला कार्यक्रम नर्गिस ने प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने मेरे बड़े भाई